प्रकाशन तिथि : 01 दिसम्बर, 2021
प्रेषण तिथि : 04 दिसम्बर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 18 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संघ सबका, इसलिए सबका सहयोग मिलता है: रोलसाहबसर

हीरक जयंती का पोस्टर विमोचन व प्रेस वार्ता

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में आगामी 22 दिसंबर 2021 को जयपुर में आयोजित हो रहे संघ के हीरक जयंती समारोह के पोस्टर का 24 नवंबर को समाज के प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति में विमोचन किया गया।

माननीय भगवानसिंह रोलसाहबसर के सानिध्य में आयोजित इस विमोचन कार्यक्रम में संघ के संघप्रमुख माननीय लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास, श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी, राज्य के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री प्रताप सिंह, राजस्थान विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष राव राजेन्द्रसिंह, पूर्व मंत्री गजेन्द्रसिंह खींवसर, विधायक नरपतसिंह राजवी, हमीरसिंह भायल, चन्द्रभान सिंह अक्या, नारायणसिंह माणकलाव, गोपालसिंह ईडवा सहित प्रदेश भर से आये राजनेताओं, पत्रकार व समाजिक संगठनों के पदाधिकारियों ने पोस्टर का विमोचन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में माननीय संघप्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने कार्यक्रम की भूमिका प्रस्तुत करते हुए बताया कि विगत एक वर्ष से हीरक जयंती वर्ष के रूप में विभिन्न कार्यक्रम किए गये। इसी कड़ी में जगह जगह 75 समारोह भी महापुरुषों की जयंतियों एवं स्नेहमिलनों के रूप में आयोजित किए गये।

अब कोरोना के कारण लगे प्रतिबंधों में मिली छूट के बाद विशाल समारोह के रूप में हीरक जयंती मनाने का निर्णय हुआ है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नई टीम हमसे बेहतर काम करेगी

पोस्टर विमोचन के कार्यक्रम में माननीय भगवानसिंह जी ने कहा कि संघ की जो नई टीम बनी है, मुझे ऐसा विश्वास है कि वह हमसे भी बेहतर काम करेगी। यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि आप सब ने यह स्वीकार किया है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ एक शीर्ष संस्था है जो समाजहित के अतिरिक्त और कुछ नहीं सोचती। वह संस्था यदि इस प्रकार कोई परिवर्तन करती हैं तो वह समाज के हित में ही है, इसी में हम सब का कल्याण है।

गीता मानव मात्र का धर्मशास्त्र है, चाहे वह हिंदु हो या मुसलमान: संरक्षक श्री

बाड़मेर शहर के स्टेशन रोड पर स्थित गांधी चौक विद्यालय में यथार्थ गीता वितरण का कार्यक्रम माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। 13 नवंबर को आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के सभी बालक, बालिकाओं तथा शिक्षकों को अट्ठारह सौ यथार्थ गीता निःशुल्क वितरित की गई। विद्यार्थियों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर ने कहा कि गीता मानव मात्र का धर्म शास्त्र है, चाहे वह हिंदू के घर में पैदा हुआ हो, चाहे मुसलमान के घर में। हमारी संस्कृति, धर्म तथा समाज में समय के पड़ाव के साथ अनेक प्रकार की रूढ़ियां घर कर गई, जिससे हम हमारा मूल उद्देश्य भूल गए तथा आपस में लड़ झगड़ कर पशुओं की तरह जीवन गुजारने तक ही सीमित हो गए। गीता हमारे जीवन में आई हुई इन सब रूढ़ियों को मिटाकर हमें सत्य की ओर, धर्म की ओर, मानवता की ओर अग्रसर करती है। राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए एकमात्र गीता ही वह विकल्प है जो देश को पुनः उन्नति के पथ पर ला सकती है। जीवन मे जब विपरीत समय आता है तो गीता से बढ़कर कोई मार्गदर्शक ग्रंथ नहीं है। यद्यपि धर्म की आड़ लेकर कई तरह की व्याख्याएं भारतीय समाज पर थोपी गई जो भ्रम पैदा करने का कारण बनी। पूज्य अड़गड़ानन्द जी महाराज रचित यथार्थ गीता इन सभी भ्रांतियों को दूर करती है। कार्यक्रम में केंद्रीय कार्यकारी कृष्णसिंह राणीगांव, विद्यालय के प्रधानाचार्य कमल सिंह रानीगांव सहित विद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी सम्मिलित हुए।

हीरक जयंती की तैयारियों का उत्साहपूर्वक आगाज

श्री भवानी निकेतन, जयपुर में होगा भव्य समारोह

कोरोना महामारी का प्रकोप कम होने पर राज्य सरकार द्वारा अन्य गतिविधियों सहित सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन से प्रतिबंध हटाने का निर्णय लिया गया है। इससे 22 दिसंबर 2021 को श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की हीरक जयंती पर समारोह के आयोजन का मार्ग भी प्रशस्त हुआ। माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर ने इच्छा जताई कि हीरक जयंती समारोह पूर्वक भव्य स्वरूप में मनाई जाए। इसी के अनुरूप महावीर सिंह जी सरवड़ी ने श्री भवानी निकेतन की प्रबंधक समिति से बात की और कार्यक्रम के स्थान के लिए जयपुर स्थित श्री भवानी निकेतन का परिसर निश्चित किया गया। कार्यक्रम की योजना व तैयारी के लिए 15 नवंबर को संघशक्ति कार्यालय में माननीय भगवान सिंह जी व संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी के सानिध्य में एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें केंद्रीय कार्यकारी, संभाग प्रमुख व अन्य सहयोगी सम्मिलित हुए। माननीय भगवानसिंह साहब ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि हीरक जयंती श्री क्षत्रिय युवक संघ के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस अवसर पर हमें समाज के भव्य स्वरूप के दर्शन का आयोजन करना है। हमारे पास समय कम है किंतु फिर भी यदि हम संकल्प पूर्वक कर्म में जुट जाएं तो कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं होगा। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के आयोजन में हमें सभी के सहयोग की आवश्यकता रहेगी लेकिन सबसे पहले हम स्वयं सक्रिय होकर तन-मन-धन से यथासंभव सहयोग करें तभी हम समाज से सहयोग मांगने का नैतिक अधिकार प्राप्त कर पाएंगे। यह कार्य ईश्वर का है और ईश्वर की कृपा व प्रेरणा से ही यह कार्य सफल होगा ऐसा विश्वास रखकर हम सभी तैयारी में जुट जाएं। माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपस्थित सहयोगियों से चर्चा करते हुए कहा कि एक वर्ष पूर्व ही 22 दिसंबर के कार्यक्रम की तैयारी प्रारंभ कर दी गई थी। 75 बड़े कार्यक्रमों के आयोजन, तीर्थ दर्शन कार्यक्रम और अन्य गतिविधियों के माध्यम से प्रचार-प्रसार की योजना बनी और उसका क्रियान्वयन भी प्रारंभ हुआ किंतु बीच में कोविड की बाधा आने से कार्यक्रम की रूपरेखा बदलने की स्थिति बनी। अब सरकारी रोक हटने से साहब श्री ने कार्यक्रम के भव्य आयोजन की इच्छा जताई जिससे सभी में पुनः उत्साह का संचार हुआ है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

हीरक जयंती की तैयारियों का उत्साहपूर्वक आगाज

तनायन (जोधपुर)

सीकर

चित्तोड़गढ़

(पेज एक जारी)

साहब श्री की इच्छा के अनुरूप ही स्थान निश्चित करके कार्यक्रम की तैयारी के लिए यह बैठक बुलाई गई है। हमें कम समय में बहुत अधिक कार्य करना है लेकिन इसमें चिंता की कोई बात नहीं है क्योंकि कर्म करना हमारे अधिकार में है और उसका परिणाम ईश्वर के हाथ में है। हम अपना कर्त्तव्य पूरी निष्ठा से निभाएं तो परिणाम सभी के लिए कल्याणकारी ही होगा। माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि कार्यक्रम के आयोजन के लिए हम जो संपर्क अभियान चलाएंगे वह समाज में चेतना लाने का कार्य करेगा। इसलिए हमें कार्यक्रम की सफलता के बारे में निश्चिंत रहना चाहिए। जिन्हें आशंका है कि महामारी का प्रकोप फिर से बढ़ने पर प्रतिबंधों की स्थिति बन सकती है तो उसमें भी कोई चिंता की बात नहीं है क्योंकि हम कार्यक्रम की तैयारी के लिए जितना भी कार्य करेंगे वह समाज में चेतना जागृत करने में सहयोगी ही बनेगा इसलिए उसके निष्फल होने का कोई भी प्रश्न नहीं है। बैठक के दौरान कार्यक्रम के भव्य आयोजन के लिए रूपरेखा बनाने पर बिंदुवार चर्चा की गई। कार्यक्रम के आयोजन के लिए आवश्यक प्रशासनिक अनुमति प्राप्त करने, कार्यक्रम में अनुमानित संख्या का लक्ष्य निर्धारित करने तथा कार्यक्रम के प्रचार प्रसार की योजना पर भी चर्चा हुई। किस संभाग से कितनी संख्या आएगी तथा इसके लिए परिवहन के साधनों की क्या व्यवस्था रहेगी इसके लिए सभी संभागप्रमुखों ने अपने प्रस्ताव रखे। कार्यक्रम के व्यय के लिए आर्थिक सहयोग जुटाने पर भी चर्चा हुई। हीरक जयंती स्मारिका के प्रकाशन तथा उसके लिए विज्ञापन जुटाने की योजना को अंतिम स्वरूप दिया गया। कार्यक्रम की तैयारी के लिए संभागवार बैठकों के आयोजन तथा हीरक जयंती संदेश यात्रा के आयोजन का भी निर्णय हुआ। कार्यक्रम में मातृशक्ति की अधिकाधिक भागीदारी तथा गणवेशधारी स्वयंसेवकों व स्वयंसेविकाओं द्वारा कार्यक्रम को गरिमापूर्ण व अनुशासित स्वरूप देने पर भी चर्चा हुई।

हीरक जयन्ती समारोह की तैयारी के लिए बैठकों का आयोजन : 15 नवंबर को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित बैठक के बाद संघ के सभी स्वयंसेवकों में हीरक जयंती को लेकर विशिष्ट प्रकार का उत्साह संचारित हो रहा है। जिस कार्यक्रम की तैयारी के लिए क्रियाशील होने की विगत एक वर्ष से योजना बना रहे थे, उन्हें धरती पर उतारने का अवसर प्रत्येक स्वयंसेवक और सहयोगी के लिए उत्सव का अवसर बन गया है और 30 नवंबर से पूर्व सभी स्थानों पर सहयोगियों के साथ बैठकें कर 1 दिसंबर से गांव गांव, ढ़ाणी ढ़ाणी पूज्य तनसिंह जी का संदेश पहुंचाने की योजनाएं बन गई। 21 नवंबर को 'संघशक्ति' जयपुर में माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सान्निध्य में मातृशक्ति की आयोजित हुई। उन्होंने उपस्थित महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि विजय सदैव शक्ति की होती है और शक्ति होती है संगठन में। हम अभिवादन में जो जय संघ शक्ति कहते हैं उसका भी यही अर्थ है कि उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए अपने संगठन को ज्यादा से ज्यादा मजबूत बनाएं। संघ पिछले 75 वर्ष से लगातार इसी संगठन की शक्ति को उभारने के लिए प्रयत्न कर रहा है। हालांकि पिछले हजारों वर्षों में हमारे क्षत्रियत्व के गुण धीरे-धीरे क्षीण होते गए हैं लेकिन बीज रूप में अभी भी वे विद्यमान है। उसी बीज को अंकुरित करने का प्रयास संघ कर रहा है। लेकिन निर्माण का कार्य कठिन और दीर्घजीवी होता है। किसी व्यक्ति और समाज को संस्कृत करने का काम भी इतना ही कठिन है। किसी भी बालक को संस्कारित करने के लिए सबसे पहला गुरु उसकी मां होती है। इसलिए बालक को क्या सिखाया जाए, यह माता को पता होना आवश्यक है। इसलिए संघ बालिकाओं को भी संस्कारित करने का कार्य कर रहा है क्योंकि आज की बालिका ही कल की माता बनेगी। बैठक के दौरान हीरक जयन्ती कार्यक्रम में महिलाओं की अधिकाधिक सहभागिता के संबंध में चर्चा की गई। जोधपुर संभाग की बैठक 16 नवंबर को संघ कार्यालय तनायन में सम्पन्न हुई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा व रेवन्त सिंह पाटोदा स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। रणधा ने कहा कि संघ की हीरक जयन्ती हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अवसर है, इसलिए इसमें जितना सहयोग हम कर सकते हैं उतना करना चाहिए। इसके लिए हमारे सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। संभागप्रमुख चन्द्रवीर सिंह देणोक भी बैठक में उपस्थित रहे। जालोर संभाग की बैठक 18 नवंबर को धानपुर में सम्पन्न हुई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने उपस्थित स्वयंसेवकों से कहा कि जब तक हम संघ के काम में अपने आप को समर्पित नहीं करते तब तक हम समाज में परिवर्तन नहीं ला सकते। संभागप्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने स्वयंसेवकों से हीरक जयन्ती की कार्ययोजना के क्रियान्वयन में एकरूपता रखने की बात कही। उदयपुर में श्री भूपाल नोबल्स के ओल्ड बॉयज भवन में 17 नवम्बर को बैठक आयोजित हुई जिसमें संभागप्रमुख भंवर सिंह बेमला ने कहा कि हीरक जयन्ती के प्रचार के लिए सभी क्षेत्रों में संपर्क करना आवश्यक है। बैठक में मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के शहर अध्यक्ष चन्द्रवीर सिंह करेलिया, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के अध्यक्ष यादवेंद्र सिंह रलावता, भानुप्रताप सिंह थाना, रणवीर सिंह जोलावास एवं हवेली ग्रुप के प्रद्युम्न सिंह गुडा सहित अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर स्थित जौहर भवन में 19 नवंबर को तथा भीलवाड़ा में घाटारानी एसोसिएट, नागौरी गार्डन में 17 नवम्बर को बैठक सम्पन्न हुई जिसमें केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि संभाग में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं होना चाहिए जहां हम हीरक जयन्ती की बात को लेकर ना पहुंचे। सभी तक अपनी बात पहुंचाने के लिए अलग-अलग टीम बनाकर कार्य करने की बात उन्होंने कही। संभागप्रमुख बृजराज सिंह खारड़ा भी सहयोगियों सहित दोनों बैठक में उपस्थित रहे। भाजयुमो के हर्षवर्धनसिंह रूद, एडवोकेट पार्षद महेंद्रसिंह मेड़तिया, जौहर स्मृति संस्थान के कोषाध्यक्ष नरपतसिंह भाटी, कर्नल रणधीरसिंह बस्सी, भोपाल पब्लिक स्कूल एमडी लालसिंह भाटियों का खेड़ा ने भी अपने विचार रखे। भीलवाड़ा बैठक में जयन्ती कार्यालय का भी प्रारम्भ किया गया। नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रान्त में डीडवाना स्थित राजपूत सभा भवन में भी 19 नवंबर को बैठक आयोजित हुई। संभागप्रमुख शिंभू सिंह आसरवा ने डीडवाना तहसील में संपर्क के लिए मंडल स्तर पर तीन टीमों का गठन कर दायित्व सौंपे। इस दौरान क्षेत्र में वाहन रैली निकालने का भी निर्णय हुआ। 19 नवम्बर को बाड़मेर संभाग की बैठक आलोक आश्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक देवी सिंह माडपुरा की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रत्येक कार्य में समाज का पूर्ण सहयोग मिलता रहा है क्योंकि समाज भली भांति जानता है कि सामाजिक एकता का स्वप्न संघ जैसे अनुशासित और ईमानदार संगठन के माध्यम से ही पूरे हो सकते हैं। हीरक जयन्ती में भी समाज का पूरा सहयोग हमें मिलेगा, आवश्यकता केवल इतनी है कि हम स्वयं सक्रिय बनें एवं समाज तक अपनी बात पहुंचाएं। रावत त्रिभुवन सिंह ने कहा कि इस कार्यक्रम को अपना मानकर हम मेहनत करेंगे तभी परिणाम आएगा। बालोतरा संभाग की बैठक वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में आयोजित हुई जिसमें बालोतरा, सिवाना, पादरू, सिणधरी, पायला, बायतु, पाटौदी, गिडा, कल्याणपुर, समदडी क्षेत्र के स्वयंसेवक व सहयोगी सम्मिलित हुए तथा हीरक जयंती से सम्बंधित विभिन्न बिन्दुओं पर विचार-विमर्श करके कार्ययोजना बनाई गई और इसके लिए उत्तरदायित्व सौंपे गए। दक्षिण मुम्बई प्रान्त की बैठक भी 19 नवंबर को सम्पन्न हुई जिसमें संभागप्रमुख नीर सिंह सिंघाणा ने मुम्बई से हीरक जयन्ती कार्यक्रम में जाने के लिए रेल के टिकट की व्यवस्था, कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार, संघशक्ति विशेषांक के लिए लेख लिखने व विज्ञापन हेतु संपर्क करने आदि बिंदुओं पर चर्चा की गई। 24 नवंबर को जोधपुर में जय भवानी नगर स्थित नवदुर्गा मंदिर में भी बैठक सम्पन्न हुई जिसमें प्रेम सिंह रणधा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जोधपुर शहर के नांदड़ी में भी बैठक समपन्न हुई जिसमें प्रेम सिंह रणधा व रेवन्त सिंह पाटोदा उपस्थित रहे। बैठक में सभी कॉलोनी के घर-घर जाकर संपर्क करने का निर्णय हुआ व प्रचार के लिए स्वयंसेवकों को दायित्व सौंपे गए। इसी प्रकार देचू मंडल की बैठक भी 24 नवम्बर को सम्पन्न हुई। शेखावाटी प्रान्त के सीकर जिले में श्री दुर्गा महिला विकास संस्थान नाथावतपुरा में हीरक जयंती समारोह की तैयारी हेतु 22 नवम्बर को बैठक रखी गई जिसमें स्वयंसेवक व सहयोगी सम्मिलित हुए और जिले की 8 तहसील के सभी गांवों में प्रचार-प्रसार की योजना बनाई गई तथा क्षेत्रवार प्रचार दलों का गठन किया गया। विज्ञापन के लिए राजनेताओं और व्यापारियों से सम्पर्क करने की योजना बनाई गई। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक भँवरसिंह नाथावतपुरा व प्रान्त प्रमुख जुगराजसिंह जुलियासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गुजरात के बनासकांठा प्रान्त में पीलूड़ा स्थित शैक्षणिक संकुल में 21 नवम्बर को तथा धानेरा स्थित राजपूत होस्टल में 22 नवम्बर को हीरक जयन्ती की तैयारी में बैठक आयोजित हुई। धानेरा की बैठक में क्षेत्र के 18 गांवों में संपर्क यात्रा के आयोजन का निर्णय हुआ। पीलूड़ा की बैठक में थराद तहसील के 35 गांवों में संपर्क के लिए दलों का गठन किया गया व तदनुसार दायित्व सौंपे गए। विशेषांक हेतु लेख व विज्ञापन की व्यवस्था करने पर भी चर्चा की गई। तहसील के मुख्य मार्गों पर होर्डिंग लगाने का भी निर्णय किया गया। प्रांतप्रमुख अजीत सिंह कुणघेर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बीकानेर संभाग के श्री डुंगरगढ़ प्रांत में हीरक जयंती की तैयारियों को लेकर बैठक 23 नवम्बर को महिला मंडल स्कूल में आयोजित हुई जिसमें संभाग प्रमुख रेवंतसिंह जाखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

बोकड़ा (जालोर)

घर घर बुलावा देने के लिए 'संघशक्ति' से दल रवाना

निंबाहेड़ा

'तनसिंह सदन' बाड़मेर से 'संघशक्ति' जयपुर तक हीरक जयंती संदेश यात्रा

जोगीदास का गांव

पोकरण

हीरक जयंती के प्रचार प्रसार एवं अधिकतम लोगों को 22 दिसंबर के समारोह में आमंत्रित करने के लिए युवा साथियों ने एक अनुठा प्रयोग 22 नवंबर को पूज्य तनसिंह जी के आवास से प्रारंभ किया। एक गाड़ी पर पूज्य श्री की तस्वीरें व पोस्टर लगाकर उसे रथ का स्वरूप दिया एवं उसके साथ दुपहिया वाहनों से जयपुर तक की यात्रा प्रारंभ की। यह यात्रा लगभग 2200 किलोमीटर की दूरी तय कर प्रदेश के 10 जिलों व 250 से अधिक गांवों से गुजरती हुई 3 दिसंबर को संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' जयपुर पहुंचेगी। 22 नवंबर को 12:15 बजे महंत प्रताप पुरी जी द्वारा बाड़मेर स्थित पूज्य तनसिंह जी सदन से यात्रा का आगाज किया गया। प्रताप पुरी जी ने यात्रा के लिए शुभकामना देते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज और राष्ट्र की अभूतपूर्व सेवा कर रहा है। संघ के 75 वर्ष पूरे होने पर जयपुर में जो भव्य कार्यक्रम होने जा रहा है उसकी तैयारी के लिए यह संदेश यात्रा यहां से प्रारंभ हुई है जो लगभग ढाई सौ गांवों से होती हुई जयपुर पहुंचेगी। मैं सभी से आह्वान करता हूं कि सभी स्थानों पर इस यात्रा का स्वागत किया जाए तथा अधिक से अधिक संख्या में जयपुर पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनाएं। यहां से रवाना होकर चौहटन चौराहा होते हुए यात्रा का कारवां पूज्य तनसिंह जी के गांव रामदेरिया पहुंचा जहां ग्रामवासियों द्वारा पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि द्वारा स्वागत किया गया। तत्पश्चात रानीगांव, तारातरा, अकोड़ा, दुधवा, सणाऊ होते हुए यात्रा दल चौहटन पहुंचा जहां चौहटन कस्बे में रैली निकाली गई तथा समाज बंधुओं के साथ बैठक आयोजित की गई। खारिया में मुस्लिम समाज द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। यहां से पूज्य तनसिंह जी तथा नारायण सिंह जी की तपोस्थली रहे श्री वेर माता जी के थान पर यात्रा पहुंची और उस स्थान पर उस वातावरण में रहने का सौभाग्य प्राप्त किया जिस वातावरण में संघ के प्रणेता ने अपनी आराध्य मां भगवती की आराधना की थी और उनके वात्सल्य को अधिकार पूर्वक प्राप्त किया था। साथ ही उस वातावरण में उन अलौकिक क्षणों की कल्पना में जीने का सुअवसर प्राप्त किया जिनमें पूज्य तनसिंह जी के पटु शिष्य पुज्य नारायण सिंह जी के जीवन में योग के अलौकिक क्षणों का अवतरण हुआ था। उन्हीं आराध्या देवी भगवती की आराधना कर यात्रा के यात्रियों ने चौहटन आकर रात्रि विश्राम किया। 23 नवंबर को चौहटन से चाडी, सेतराऊ, रामसर, हरसाणी, गिराब, असाडी, बईया, झिनझिनयाली, कुंडा, कोहरा, रणधा, मोढ़ा होते हुए यात्रा जोगीदास का गांव पहुंची जहां रात्रि विश्राम किया। इस दौरान विभिन्न स्थानों पर ग्रामवासियों द्वारा उत्साहपूर्वक यात्रा का स्वागत किया गया तथा यात्रा में शामिल स्वयंसेवकों द्वारा इन गांवों में बैठकें करके हीरक जयन्ती की जानकारी देते हुए सभी से 22 दिसंबर को जयपुर पहुंचने का आग्रह किया गया। जैसलमेर की सीमा में प्रवेश से ही केशरिया साफे बांधे जैसलमेर के स्वयंसेवकों का एक दल यात्रा के साथ

जैसलमेर

जुड़ा जो जोगीदास का गांव तक यात्रा के रथ की अगवानी करता रहा। जोगीदास का गांव से 24 नवंबर को प्रातः पुनः यात्रा प्रारंभ हुई जो देवड़ा, नागराजा फांटा, चेलक, नरसिंह की ढाणी, भोपा आदि गांवों से होते हुए तेम्बेडराय मंदिर पहुंची। यहां मंदिर में दर्शन व प्रार्थना के पश्चात यात्रा का कारवां दोपहर लगभग 12 बजे शहीद जयसिंह चौराहा, जैसलमेर पहुंचा जहां से गणवेशधारी स्थानीय स्वयंसेवक अपने वाहनों को लेकर यात्रा में शामिल हुए। जैसलमेर शहर के विभिन्न हिस्सों से गुजरकर यात्रा का कारवां संघ कार्यालय 'तनाश्रम' पहुंचा जहां यात्रा में शामिल वाहनों व स्वयंसेवकों को तिलक लगाकर उनका स्वागत किया गया। तत्पश्चात स्थानीय समाजबंधुओं के साथ बैठक का आयोजन हुआ जिसमें संभागप्रमुख तारेन्द्र सिंह झिनझिनयाली व महेंद्र सिंह तारातरा ने हीरक जयन्ती के संबंध में जानकारी प्रदान की। यहीं प्रेस वार्ता कर पत्रकारों से हीरक जयंती समारोह व हीरक जयंती संदेश यात्रा की जानकारी साझा की गई। शहर के भोपा चौक पर भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकताओं ने जिलाध्यक्ष उदय सिंह भाटी के नेतृत्व में यात्रा का स्वागत किया। यहां से हमीरा, रिदवा, भागू का फांटा, सावला जेठा, चांधन, दहिसर, दवाड़ा व मुलाना गांवों से होते हुए संदेश यात्रा देगराय मंदिर पहुंची जहां रात्रि विश्राम किया। देगराय मंदिर में देवी से पूज्य तनसिंह जी के संदेश को जीवन में उतारने व उसे घर घर तक पहुंचाने की क्षमता देने की प्रार्थना की गई।

25 नवंबर यात्रा देवीकोट, लखमणा, भिकसर फांटा, लक्ष्मणसर फांटा, डांगरी, भैंसड़ा, बेतीणा, लूणा, साकड़ा, सनावड़ा, चौक, केलावा आदि गांवों से होते हुए पोकरण पहुंची जहां दयाल राजपूत छात्रावास में समाजबंधुओं के साथ बैठक रखी गई। यहां से रामदेवरा पहुंचकर यात्रा दल ने रात्रि विश्राम किया। जिन क्षेत्रों में भी यात्रा पहुंच रही है वहाँ के स्थानीय समाजबंधु भी यात्रा में शामिल होकर हीरक जयन्ती के संदेश को सभी तक पहुंचाने में सहभागी बन रहे हैं। 26 नवम्बर को रामदेवरा से प्रारम्भ होकर यात्रा टेकरा, टेपू, सिहड़ा व जैमला होते हुए शेखासर पहुंची। यहां से बाप, फलोदी, आमला, शैतान सिंह नगर, देणोक, निंबो का तालाब, भादा, कड़वा, बेदु व बापिणी से होते हुए जाखण पहुंचकर रात्रि विश्राम किया। यहां सभी जगह यात्रा का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए रथ पर लगे पूज्य तनसिंह जी के चित्र पर पुष्प वर्षा की गई। बाप में कस्बे के बाजार से यात्रा निकली तब सभी समाज के लोगों ने स्वागत किया गया।फलोदी छात्रावास में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें कूंपसिंह पातावत सहित अनेक लोग उपस्थित रहे। शाम को बापिणी में बैठक कर हीरक जयंती के लिए आमंत्रण दिया गया। 27 नवम्बर को प्रातः 8 बजे संदेश यात्रा जाखण से रवाना हुई तथा खटोड़ा, बिरलोका, पांचला सिद्धा, खींवसर, माडपुरा, आचीणा, देऊ फांटा, देऊ होते हुए पांचोड़ी पहुंची जहां दिन का भोजन किया। नागौर की सीमा पर धनंजयसिंह खींवसर यात्रा का स्वागत करने पहुंचे व खींवसर तक साथ रहे। पांचोड़ी में भी यात्रा का भरपूर स्वागत हुआ। खींवसर में अन्य समाजों द्वारा भी स्वागत किया गया। यहां से यात्रा भोमासर, करणु, रिड़मलसर, चांपासर, रोहिणा हते हुए बुगड़ी के बाद बीकानेर की सीमा में प्रविष्ट हुई। बीकानेर के नोखा विधानसभा क्षेत्र के शोभाणा, भादला, सारूंडा, कक्कू, कंवलीसर, रोड़ा व नोखा से होते हुए चरकड़ा पहुंची जहां रात्रि विश्राम किया।

टेकरा

बापिणी

संपादकीय

विविधता में एकता

यह बात हम बचपन से सुनते आये हैं। विद्यालयों में बचपन से ही यह रटाया जाता है, 'विविधता में एकता, भारत की विशेषता' लेकिन क्या हम पढ़ने वाले और हमें पढ़ाने वाले भी जानते थे कि विविधता क्या होती है और उसमें कौनसी एकता निहित है? विविधता का वर्णन करते समय भाषा, भूगोल, पहनावा, पूजा पद्धतियों आदि की विविधता बता दी जाती है लेकिन एकता के नाम पर कुछ विशेष बात नहीं हो पाती। पाठ्य पुस्तकों में एकता के नाम पर अंग्रेज सत्ता के विरुद्ध आंदोलन आदि की चर्चा कर फौरी एकता की बात कर विषय को रफा दफा कर दिया जाता है और ऐसे में 'विविधता में एकता, भारत की विशेषता' का नारा केवल रटाया मात्र जाता है, उसकी पुष्टि नहीं हो पाती। क्योंकि जिस तत्व के कारण मूल रूप से हम एक हैं, केवल भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि एक है, सभी जड़ चेतन एक हैं इसकी चर्चा न तो अध्यापकों के बस की बात है और ना ही पाठ्यपुस्तकों और उनके निमार्ताओं के। इसीलिए यह नारा मात्र एक नारा ही बना रहता है और आचरण में हमारे विविधता ही हावी रहती है। लेकिन क्या विविधता कोई अभिशाप है? विविधता के अभाव में क्या हमारा जीवन नीरस नहीं हो जाएगा? इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने जाएंगे तो पायेंगे कि विविधता अभिशाप नहीं बल्कि परमेश्वर का वरदान है और इससे भी आगे जायें तो विविधता इस सृष्टि का स्वभाव है। हम यदि गहन विश्लेषण करेंगे तो पायेंगे कि परमेश्वर ने इस सृष्टि को बनाया ही विविध है। उस सृष्टा की सृष्टि में कोई भी कृति भौतिक रूप से एक दूसरे के समान नहीं है। एक ही पेड़ के पत्तों का भी यदि हम गहराई से निरीक्षण करेंगे तो पायेंगे कि हर पत्ता अपने आप में विशिष्ट है, कोई भी हुबहू दूसरे जैसा नहीं है। इस प्रकार विविधता इस सृष्टि का प्रकट स्वभाव है और इसका यह विविध प्रकटीकरण ही इसे समृद्ध बनाता है। हम जरा सा विचार करें कि यदि इस सृष्टि में विभिन्न रंग न होकर केवल एक ही रंग होता तो यह सृष्टि कैसी होती? यदि विभिन्न प्रकार के पक्षी न होकर केवल कौए ही होते तो कैसा होता? यदि विविध फसलें न होकर केवल एक ही प्रकार का अनाज होता तो क्या हमारे भोजन में रस रह पाता? यदि केवल गर्मी ही गर्मी होती, सर्दी नहीं होती तो क्या क्या जीवन इतना ही रसीला बन पाता? ऐसे अनेक प्रश्न उभरते हैं जो हमें परमात्मा की इस सृष्टि में व्याप्त विविधता की सार्थकता समझाते है। इन सब बातों से स्पष्ट है कि यह विविधता ही है जिसने इस सृष्टि को समृद्ध बनाया है। इसे रसीला बनाया है, सुंदर बनाया है, आकर्षक बनाया है, जीने लायक बनाया है। इसलिए पेड़, पत्ते, पत्थर, पक्षी, पशु, मानव आदि सभी में पायी जाने वाली यह विविधता हमारे जीवन समृद्ध बनाती है। हमारी विभिन्न बोलियां, हमारा विविध पहनावा, हमारा विविध प्रकार का भोजन, रहन सहन, परंपराएं, नृत्य, संगीत, रीति रिवाज आदि सब हमारे जीवन की समृद्धि के लिए आवश्यक है, परमेश्वर का प्रसाद है। लेकिन जिस प्रकार से सृष्टि अपने विविध रूपों में मुखर हुई है उतनी ही मुखरता से इसमें एकता भी समाहित है। वास्तव में यह एक ही है, उसका प्रकटीकरण ही विविध है। इसकी मूलभूत एकता तो इसका सृष्टा ही है। इस संपूर्ण सृष्टि का सृष्टा एक ही है। वही सब जगह विविध रूपों में प्रकट हो रहा है। मूल रूप से वही सबमें समाहित है या सब उसी में समाहित हैं इसीलिए हमारे उपनिषद कहते हैं कि वह भी पूर्ण है और यह भी पूर्ण है और पूर्ण से पूर्ण की ही रचना हुई है। पूर्ण में से पूर्ण को निकाल देने पर पूर्ण ही शेष बचता है और यही वह मूलभूत एकता है जो इस संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त है और इसी मूलभूत एकता को समझने के बाद ही विविधता में एकता के दर्शन संभव हो सकते हैं। यही वह एकता है जिसे सबको समझाया जाना चाहिए, बच्चों को समझाया जाना चाहिए, पाठ्यक्रम में समाई जानी चाहिए लेकिन क्या हमारे विद्यालयो में हम इस एकता की बात भी कर पाते हैं? क्या हमारे पाठ्यक्रम इस बात को स्पर्श भी करते हैं और ऐसा नहीं कर पाते इसीलिए विविधता में एकता का नारा केवल नारा बनकर रह गया है और उसका प्रभाव शुन्य के स्तर पर पहुंच गया है। तो क्या यह नारा झूठा है कि विविधता में एकता भारत की विशेषता है? नहीं, यह नारा अक्षरशः सत्य है। यह भारत ही है जिसने विविधता और एकता दोनों को जीया है और जी रहा है। यह भारत की ही परंपरा है जिसने सैनिक एकता की नहीं बल्कि तात्विक एकता की बात कही है। यह भारत ही है जिसमें सबका भगवान एक है लेकिन उसके रूप भिन्न भिन्न हैं। यह भारत ही है जिसमें भगवान एक हैं लेकिन उनकी पूजा अलग अलग पद्धतियों से होती है। यह भारत ही है जिसमें कुछ मूर्ख और जड़ लोगों को या स्वार्थ बुद्धि से आक्रांत लोगों को छोड़ दें तो एक दूसरे की विविधता का सम्मान किया जाता है और यह समझ कर किया जाता है कि पूजा तो सर्वत्र व्याप्त ईश्वर की ही कर रहे हैं, बस कोई पूर्व की तरफ मूंह करके बैठता है तो कोई पश्चिम की तरफ। भारत ने कभी संपूर्ण समाज के लिए रेजीमेंटल एकता की बात नहीं की बल्कि उस तात्विक एकता की ओर बढ़ने की बात की है। इसीलिए यहां प्रकट में विविधतापूर्ण समृद्धि रही तो अप्रकट रूप से व्याप्त एकता का भी अहसास रहा और यही भारत की विशेषता है। भारत की यह विशेषता ही इसकी भारतीयता है और यह भारतीयता भी इसकी एकता का बड़ा कारण है। यह भारतीयता ही हमारी संपूर्ण विविधताओं को एकता में समाहित करती है। पाठ्यपुस्तकें हमारी साझी विरासत को केवल स्वतंत्रता आंदोलन तक ही लेकर जाना चाहती हैं क्योंकि इसी से सत्तासीन लोगों का अहंकार संतुष्ट होता है या यूं कहें कि उनके भीतर व्याप्त हीन भावना को तुष्टि मिलती है इसीलिए विद्यालयों में हमारी उस साझी विरासत के बारे में बात नहीं की जाती जो उत्तर से लेकर दक्षिण और पूर्व से लेकर पश्चिम तक राम के रूप में विराजमान है। उस साझी विरासत के बारे में भी बात नहीं होती जो वेदों की ऋचाओं और उपनिषदों के सूत्रों के रूप में संपूर्ण भारत के मानस के भीतर शास्त्रीय या लोक मान्यताओं के रूप में व्याप्त है। इस भारतीयता को समझे बिना भारत की इस विशेषता को नहीं समझा जा सकता कि भारत मूलभूत रूप से एक है। इस एकता को समझे और समझाये बिना सरकार प्रायोजित एकता की बातें केवल बातें बनकर रह जाती हैं। आज यही सब हो रहा है क्योंकि स्वार्थ प्रेरित बुद्धि से संचालित व्यवस्था केवल अपने आकाओं के हित साधन के लिए, अपने आकाओं के अहंकार की तुष्टि के लिए काम करती है, वह केवल प्राप्त करना चाहती है, हड़पना चाहती है, वह यह कभी नहीं चाहती कि देश में कुछ भी बात ऐसी हो जो उनके कद से बड़ी हो जाये, इसलिए वे हर बढ़े हुए कद को छोटा सिद्ध कर स्वयं को बड़ा सिद्ध करने की कोशिश करते हैं क्योंकि कि स्वयं का कद बढ़ाने से लिए तपना पड़ता है, तपस्या त्याग मांगती है, बलिदान मांगती है, छोड़ने के लिए उद्यत करती है लेकिन जो स्वार्थ बुद्धि से प्रेरित लोग हैं उनके लिए यह बस की बात नहीं है इसलिए वे अपना कद बढ़ाने की नहीं बल्कि अन्यों का कद छोटा कर स्वयं को बड़ा बताने की बात करते हैं और इसी मानसिकता की शिकार है हमारी भारतीतया इसीलिए यहां हर बात को स्वतंत्रता आंदोलन तक सीमित करने की कोशिश की जाती है और इसीलिए भारत की समृद्ध विविधता में समाहित एकता की सुदीर्घ परंपरा को सरकारी तंत्र महत्व देना नहीं चाहता और इसीलिए 'विविधता में एकता, भारत की विशेषता' का नारा मात्र नारा बनकर ही रह जाता है।

शाकम्भरी का चाहमान वंश

अर्णोराज के पुत्रों में सबसे योग्य व शक्तिशाली विग्रहराज चतुर्थ सिद्ध हुआ। पितृहंता जगदेव को हराकर विग्रहराज चतुर्थ 1153 ई. में शासक बना। विग्रहराज चतुर्थ शाकम्भरी के चाहमान शासकों में सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। विग्रहराज चतुर्थ का शासन काल शाकम्भरी के चाहमान वंश में एक युगान्तकारी अध्याय है। विग्रहराज चतुर्थ ने अपने समकालीन उत्तर भारत के सभी शासकों को पराजित कर शाकम्भरी वंश को सार्वभौम में ला दिया। परमार साम्राज्य के विघटन के पश्चात देश की पश्चिमोत्तर सीमा की रक्षा का भार चाहमानों पर आ पड़ा तथा विग्रहराज ने सफलतापूर्वक उसका निर्वहन किया। भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर यामिनी साम्राज्य के लगातार आक्रमण हो रहे थे, विग्रहराज ने अपने पराक्रम और युद्ध कौशल से लाहौर के यामिनी वंश की शक्ति का भी विनाश किया और उसके बारम्बार भारत पर होने वाले आक्रमणों पर रोक लगाई। ये विग्रहराज चतुर्थ की महान सफलता थी।

विग्रहराज चतुर्थ की विजयों में दिल्ली विजय उल्लेखनीय है। यहां तोमरवंश का शासन था। बिजौलिया लेख से इस विजय की सूचना मिलती है, दिल्ली के तोमर शासकों के साथ चौहान शासकों का संघर्ष दीर्घकाल से चला आ रहा था इस संघर्ष में विग्रहराज चतुर्थ के समय चाहमानों को निर्णायक विजय प्राप्त हुई और अब वे विग्रहराज चतुर्थ के अधीनस्थ सामन्त के रूप में शासन कर रहे थे। विग्रहराज को अपने समकालीन प्रतिहार और परमार शासकों के साथ भी संघर्ष करना पड़ा। अर्णोराज के समय चाहमानों को चालुक्य कुमार पाल के हाथों परास्त होना पड़ा था, विग्रहराज चतुर्थ ने इस पराजय का बदला लेने के लिए चालुक्यों के विरुद्ध अभियान छेड़ दिया। विग्रहराज चतुर्थ ने कुमारपाल को परास्त किया और मेवाड़ तथा मारवाड़ पर अपना आधिपत्य जमा लिया। नाडौल, चित्तौड़ व जालौर पर भी अपने अधिकार को सुदृढ़ किया। बिजौलिया लेख के अनुसार विग्रहराज चतुर्थ ने भदानकों पर भी विजय प्राप्त की जिनका राज्य मथुरा और भरतपुर के मध्य था। विग्रहराज के दिल्ली शिवालिक लेख से तुर्क आक्रमणकारी पर उसकी विजय के बारे में पता चलता है। विग्रहराज चतुर्थ का समकालीन तुर्क शासक ताहौर का शासक खुसरुशाह था जिसने चाहमान राज्य पर आक्रमण किया विग्रहराज ने तुर्कों को बुरी तरह परास्त कर खदेड़ दिया और तुर्क साम्राज्य के कुछ प्रदेशों पर अपना अधिकार कर लिया। दिल्ली शिवालिक लेख के अनुसार हिमालय की तलहटी तक विग्रहराज का शासन था। सतलज तथा यमुना नदियों के मध्य स्थित पंजाब का एक बड़ा भाग, उत्तर पूर्व में गंगाघाटी तक का प्रदेश अब चाहमान साम्राज्य में सम्मिलित था। इस प्रकार विग्रहराज चतुर्थ उत्तर भारत का वास्तविक सार्वभौम सम्राट था, जिसने अपने वंश की प्रतिष्ठा को सर्वोच्च शिकर पर पहुंचाया। अपनी महानता के अनुरूप विग्रहराज चतुर्थ ने परमभट्टारक, परमेश्वर, महाराजाधिराज जैसी उपाधियां धारण की। विजेता और कुशल यौद्धा होने के साथ-साथ वह स्वयं एक उच्च कोटि का विद्वान तथा विद्वानों का आश्रयदाता भी था। जयानक विग्रहराज को 'कवि बान्धव' तथा सोमदेव 'विद्वानों में सर्वप्रथम' कहता है। विग्रहराज चतुर्थ ने 'हरिकेली' नामक नाटक की रचना की जो उसकी उच्च कोटि की काव्यात्मक प्रतिभा का प्रमाण है। विग्रहराज के दरबार में 'ललित विग्रहराज' जैसी श्रेष्ठ कृति का रचियता सोमदेव आश्रय पाता था। विग्रहराज ने अजमेर शहर में अनेक भव्य भवनों का निर्माण करवाया, जिनमें सरस्वती मंदिर उल्लेखनीय है। विग्रहराज ने 'बीसलसर' नामक झील का निर्माण करवाया। वह शैव मतानुयायी था पर सभी धर्मों के प्रति समभाव रखता था। निःसंदेह वह शाकम्भरी के चाहमान वंश का श्रेष्ठतम शासक था। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ दो का शेष)

साणंद

बाड़मेर

भीलवाड़ा

विधायक सिद्धि कुमारी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि संघ का यह आयोजन हम सबका है और हम सभी को मिल कर इसे सफल बनाना है। कार्यक्रम में समाज के अनेक गणमान्य लोगों ने भाग लिया। श्री डुंगरगढ़ में स्थानीय रघुकुल राजपूत छात्रावास में भी इसी दिन बैठक आयोजित हुई जिसमें संभागप्रमुख रेवंत सिंह जाखासर, पूर्व प्रधान छेलूसिंह शेखावत, भंवर सिंह चंद्रावत जोधासर, वरिष्ठ स्वयंसेवक भरत सिंह सेरूणा, पूर्व सरपंच रतन सिंह केऊ, व्यवसायी भगीरथ सिंह धर्मास, भंवरसिंह जंझेउ, भाजपा नेता विक्रम सिंह सत्तासर, अगर सिंह कोटासर और श्री डुंगरगढ़ प्रांत के सभी गांवों के गणमान्य समाज बंधुओं ने भाग लिया। इस दौरान 30 बसों से 22 दिसंबर को जयपुर जाने का निश्चय हुआ तथा इसके लिए आर्थिक सहयोग की व्यवस्था पर चर्चा हुई। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के डीडवाना मंडल में हीरक जयंती समारोह के सफल आयोजन हेतु 26 नवम्बर को रूवां में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें रूवां, सानियां, खरेश, लोरोली खुर्द, प्यावां, पीड़वा, खोजास, गांवड़ी, खाटू के समाजबंधुओं ने भाग लिया और कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु दायित्व विभाजन किया गया। कार्यक्रम में श्याम प्रताप सिंह रूंवा, लक्ष्मण सिंह खाटु, मोहन सिंह प्यांवा, जयसिंह सागुबड़ी सहित अनेक गणमान्य लोग सम्मिलित हुए। हीरक जयन्ती समारोह में उदयपुर से अधिकतम संख्या में भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष बैठक 26 नवंबर को अलख नयन मंदिर, दुर्गा नर्सरी रोड, उदयपुर पर आयोजित की गई। बैठक में 100 से अधिक समाजबंधुओं ने उपस्थित रहकर हीरक जयंती समारोह के सम्बंध में अपना अपना उत्तरदायित्व एवं कार्यक्रम में भाग लेने की रूपरेखा तय की। उदयपुर संभाग प्रमुख भंवर सिंह जी बेमला ने समस्त सहयोगियों से हीरक जयंती समारोह में बढ़-चढ़कर भाग लेने एवं समारोह को सफल बनाने हेतु पुरजोर ऊर्जा के साथ कार्य करने का आह्वान किया। चूरू के गांधीनगर कॉलोनी स्थित बणीर राजपूत छात्रावास में भी हीरक जयंती की तैयारियों के लिए एक बैठक आयोजित हुई जिसमें प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह आलसर व सुमेर सिंह गुड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर स्थित जोहर भवन में भी 26 नवंबर को एक बैठक संपन्न हुई। केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि क्षत्रिय की पहचान त्याग से है। जयपुर में मनाई जाने वाली हीरक जयंती की तैयारी हेतु कार्य विभाजन कर हम सभी इसमें मनोयोग से जुट जाएं। बैठक में जिले की सभी तहसीलों से बनाई गई स्वयंसेवकों की समितियों के सदस्यों के कार्य की समीक्षा करते हुए एक-एक समन्वयक की नियुक्ति की गई जिसका कार्यालय से सीधा संपर्क रहेगा। सभी ने उत्साह से कार्य करने की इच्छा व्यक्त की साथ ही सभी तहसीलों में तैयारी बैठकें 2 दिसंबर से पूर्व पूर्ण करने का भी निर्णय हुआ। बैठक में उप जिला प्रमुख भूपेंद्र सिंह बडोली, भाजयुमो के हर्षवर्धन सिंह रूद, कर्नल रणधीर सिंह बस्सी, हनुमंत सिंह बोहेड़ा, पूर्व प्रधान गणपत सिंह चुंडावत, शक्ति सिंह मुरलिया, जौहर स्मृति संस्थान कोषाध्यक्ष नरपतसिंह भाटी, भंवर सिंह खरड़ीबावड़ी, लक्ष्मणसिंह बडोली, दिलीप सिंह रूद, हर्षवर्धन सिंह गुढा उपस्थित रहे। बैठक में महिला टीम का भी गठन किया गया जिसमें समन्वयक के रूप में निर्मला कुंवर राठौड़, मीना कुंवर सहाड़ा, सुरेशकुंवर कारुंडा को जिम्मेदारी दी गई। इस दौरान हीरक जयंती पोस्टर का भी विमोचन किया गया। जोधपुर में सेखाला मंडल की बैठक ए बी स्कूल सेखाला में 25 नवम्बर को सम्पन्न हुई। वरिष्ठ स्वयंसेवक हरि सिंह ढेलाणा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। बाड़मेर संभाग के शिव प्रान्त में मातेश्वरी शाखा भिंयाड़ द्वारा भी हीरक जयन्ती के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें स्वयंसेवकों ने 75 KYS व क्षत्रिय के आकार में मानव श्रृंखला बनाई। भिंयाड़ मंडल की बैठक में आरंग, चोचरा, धारवी, बलाई, पाबूसर, कोटडियों की ढाणी, लखासर शाखाओं से स्वयंसेवक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। भीलवाड़ा जिले में गुलाबपुरा स्थित पारीक होटल में राजपूत समाज की बैठक आयोजित हुई जिसमें हुरड़ा तहसील से 10 बसों द्वारा हीरक जयन्ती कार्यक्रम में पहुंचने का निर्णय किया गया। भीलवाड़ा जिले में कोटड़ी में भी बैठक का आयोजन हुआ। वागड़ प्रान्त की बैठक बांसवाड़ा में डांगपाड़ा राजपूत छात्रावास में केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली की उपस्थिति में बैठक रखी गई। बीकानेर के बज्जू में भी 21 नवम्बर को बैठक रखी गई जिसमें गुलाब सिंह आशापुरा व मगन सिंह गेमरपुरा ने उपस्थित समाजबंधुओं से हीरक जयन्ती कार्यक्रम में सहभागी बनने का आह्वान किया। पाली प्रान्त में भी हीरक जयंती समारोह हेतु विभिन्न स्थानों पर बैठकें आयोजित हुई। 21 नवम्बर को रोहट मण्डल प्रमुख लालसिंह सिराणा ने सहयोगियों के साथ मिलकर 19 गांवो से 5 बसों की योजना तय की। 23 नवम्बर को बहादुर सिंह सारंगवास ने समाजबंधुओं से चर्चा करके सोजत मण्डल के केलवाद सर्किल के 25 गांवो की 5 बसे तय की। 23 को ही सोजत सिटी में कमलसिंह खारियां सोढ़ा व जितेन्द्र सिंह बुटेलाव ने समाजबंधुओं के साथ बैठक की जिसमें सोजत सिटी के गांवो की 8 बस तय की गई। 24 नवम्बर को महिपाल सिंह बासनी ने मारवाड़-देसुरी मण्डल के जोजावर सर्किल में समाजबंधुओं के साथ बैठक की जिसमें भवानी सिंह बासनी, कुलदीप सिंह, विचित्र सिंह मगरतलाव, श्रवण सिंह सांसरी आदि उपस्थित रहे। इसी दिन राणावास सर्किल की बैठक गोविन्द राजपुत छात्रावास में हुई जिसमें छैलसिंह मेवी, पुष्पेन्द्र सिंह, रिपुदमन सिंह, महिपाल सिंह, गंगा सिंह सहित अनेकों समाजबंधु सम्मिलित हुए। 25 नवम्बर को खिंवाड़ा में खिंवाड़ा सर्किल की बैठक हुई जिसमें मानवेंद्र सिंह बागोल, शैतान सिंह गजनी पुरा, गोपाल सिंह खिंवाड़ा, महावीर सिंह मेवी समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। मारवाड़ जंक्शन सर्किल में भी 24 को ही बैठक हुई जिसमें ओम सिंह खारियां सोढ़ा, गोविन्द सिंह, राजेंद्र सिंह बिठोडा कल्ला उपस्थित रहे। 26 नवम्बर को देसूरी सर्किल का कार्यक्रम देसूरी में हुआ जिसमें पूरे मण्डल से 25 बस में जयपुर जाने का निर्णय लिया गया। श्रवण सिंह व महेंद्र सिंह समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। साणंद (गुजरात) में हीरक जयंती पोस्टर विमोचन कार्यक्रम संपन्नः साणंद स्थित वाघेला बोर्डिंग में 24 नवंबर को श्री क्षत्रिय युवक संघ, श्री राजपूत विकास संघ साणंद तथा श्री अंबे स्वयंसेवक संघ कानेटी के संयुक्त तत्वाधान में हीरक जयंती पोस्टर विमोचन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। साणंद ठाकुर साहब ध्रुव सिंह, नटूभा वाघेला (अध्यक्ष वाघेला बोर्डिंग ट्रस्ट) जितेंद्र सिंह वाघेला पूर्व चेयरमैन एपीएमसी साणंद, अरविंद सिंह वाघेला (प्रमुख तहसील पंचायत साणंद), संभाग प्रमुख दीवान सिंह कानेटी, राजपूत विकास संघ के अध्यक्ष जितेंद्र सिंह रैथल ने हीरक जयन्ती समारोह के पोस्टर का विमोचन किया। सभी महानुभावों ने हीरक जयन्ती समारोह के लिए सभी तरह के सहयोग की बात कही। इस दौरान गांधीनगर, अहमदाबाद, खेड़ा, आणंद और बड़ौदा में संपर्क अभियान चलाने व 1 दिसंबर को साणंद में बाइक रैली निकलने का भी निर्णय किया गया।

संघ कार्य का प्रकटीकरण है हीरक जयंती समारोहः श्री क्षत्रिय संघ ने विगत 75 वर्षों की तपस्या से समाज में संस्कार निर्माण कार्य के साथ-साथ लोक संग्रह का कार्य भी किया है जिसका प्रकटीकरण 22 दिसंबर को भवानी निकेतन जयपुर के प्रांगण में होने वाला हीरक जयंती समारोह है। इस समारोह में प्रदेश के विभिन्न हिस्सों के साथ-साथ गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व देश के अन्य क्षेत्रों से भी समाजबंधु शामिल होंगे। समाज के ऐसे भव्य और गरिमामयी स्वरूप के दर्शन का अवसर कभी कभी मिलता है। हम सभी सद्भावना और सहभागिता ही इस कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाएगी। उपरोक्त संदेश माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्यांकाबास ने 26 नवम्बर को सीकर स्थित श्री कल्याण छात्रावास में राजपूत समाज के विभिन्न संगठनों के पदाधिकारियों की बैठक को संबोधित करते हुए दिया। कार्यक्रम में चितरंजन सिंह राठौड़, ईश्वर सिंह राठौड़, दयाल सिंह रोरु, बाबू सिंह बाजोर, गजेंद्र सिंह राजास, कान सिंह कटराथल, सुल्तान सिंह नागवा, राम सिंह पिपराली सहित समाज के कई गणमान्य बंधु उपस्थित रहे। प्रान्त प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने हीरक जयन्ती कार्यक्रम में समाज बंधु किस प्रकार सहयोगी बन सकते हैं, इसकी विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस प्रकार संघ के सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र में जयंती को लेकर नित्य बैठकें व सम्पर्क जारी है जिनकी सूचना संघ के सोशल मीडिया अकाउंट्स पर प्रतिदिन डाली जा रही है।

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

14 नवम्बर को रविवारीय शाखा में पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 353 पर चर्चा करते हुये वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने बताया कि स्वयं का खो जाना महत्त्वपूर्ण है, लेकिन बहुत मुश्किल है। खो जाने का अर्थ है अपने आप को समर्पित करना। अपनापन नहीं रहना, आत्मा जैसे परमात्मा में मिल जाती है। व्यक्ति किसी छोटी सी वस्तु के खो जाने पर भी परेशान होता है जबकि वो वस्तु समाप्त नहीं हुई है। वह किसी दूसरे के कब्जे में आ गई है पर उसका अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ है। लेकिन फिर भी हम उसके लिए परेशान होते हैं। लेकिन अगर हम खुद खो जायें अर्थात मैं अलग हूँ, यह अपनापन खत्म कर दिया तो खोने का प्रश्न ही नहीं होगा। सब कुछ ईश्वर का है वो दे चाहे ना दे। जो घटित हो रहा है वो ईश्वर द्वारा हो रहा है तो फिर हम उसके लिए चिन्ता क्यूं करें। ऐसा खो जाना आसान बात नहीं है, बहुत मुश्किल है। इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण धीरे-धीरे सांसारिक उत्तरदायित्वों को निभाते हुये उनमें लिप्त ना होने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया द्वारा हम अपनी लिप्तता को कम करके समाप्त कर देते हैं। तब ऐसा भाव उदय होता है कि मैं संघ का हो गया तो मेरा सब कुछ संघ का हो गया। मैं समाज का हो गया तो मेरा सब कुछ समाज का हो गया। मेरा कुछ भी नहीं है। आगे स्वयंसेवकों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि पूर्ण समर्पण के बाद वहां जो कुछ भी हो रहा है वो मेरे लिए हो रहा है फिर चाहे कान खींचे जा रहे है या थपकी दी जा रही है। हमें अपनी क्षमतानुसार धैर्य पूर्वक पारिवारिक दायित्व निभाते हुये संघ कार्य करना चाहिए। तभी धीरे-धीरे ईश्वर की ओर बढ़ने की यात्रा प्रारम्भ होगी। गीता में लिखा है कि इस जीवन में यात्रा जहां समाप्त होगी अगले जीवन में वहीं से प्रारम्भ होगी। जितने भी संत, महापुरूष हुये हैं उन्होंने कोई एक जीवन में सिद्धि प्राप्त नहीं कर ली, इसमें कई जीवन लगते है। अतः जरूरी है हम उस ओर बढ़ना प्रारम्भ करें। स्वयं की स्थिति, न्यूनतम आवश्यकता का ध्यान में रखकर काम करें तो फिर स्वतः ही लिप्तता समाप्त हो जाती है। संघ को व्यक्तिगत जीवन में उतारना, जैसा संघ चाहता है वैसा हमारा व्यवहार होवे तो ऐसा करते-करते समर्पण स्वतः हो जाएगा। हमारे जीवन के हर कार्य में यह ध्यान रहे कि यह संघ के अनुकूल है या नहीं। संघ क्या चाहता है यह ध्यान रहे तो समर्पण जीवन में उतर जायेगा। 21 नवंबर को पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 215 पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रगति के लिए मिले हुए अवसर का सदुपयोग करना अत्यंत आवश्यक है। साधक के लिए तो सही अवसर को पहचानना अत्यंत आवश्यक है। यदि साधक अपनी साधना में आए हुए एक भी अवसर को चुकता है तो उसकी प्रगति रुक जाती है। संयोग रूपी अवसर तो सभी के सामने आते ही हैं लेकिन उनका लाभ केवल भाग्यशाली ही उठा पाते हैं। जो मिले हुए अवसर की उपेक्षा करते हैं उनका भाग्य भी उनके विपरीत हो जाता है। कोई भी संयोग अपने पीछे घटनाओं और कारणों का एक लंबा क्रम लिए होता है जिसे हम जान नहीं पाते हैं। किसी महान चरित्र के गठन का संयोग भी ऐसा ही एक दुर्लभ संयोग होता है। यह अवसर जीवनव्यापी प्रभाव वाला होता है लेकिन अधिकांश लोग अपने अहंकार के वशवर्ती होने से इस दुर्लभ अवसर को पहचान ही नहीं पाते। केवल संस्कारी लोग ही ऐसे अवसर को पहचान कर उसका लाभ उठा पाते हैं जबकि संस्कारहीन व्यक्ति उस अवसर को खोकर बाद में उसके लिए पछताया करते हैं। संघ भी हमारे लिए ऐसा ही दुर्लभ संयोग हैं। इस संयोग का लाभ हम तभी उठा सकते हैं जब हम संघ के प्रति जागृत हों। यदि हम जागृत होकर संघ के निदेशों का पालन नहीं करेंगे तो हमारे हाथ में आया हुआ ऐसा अनुपम अक्सर भी निकल जाएगा और हम केवल पछताते रह जाएंगे। आगे अवतरण के संबंध में स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ में हम अपने संस्कारों के कारण ही आ सके हैं। हमारे भीतर कहीं ऐसे संस्कार विद्यमान थे जो हमें खींचकर संघ में ले आएं हैं। हमारे जीवन में जो यह दुर्लभ संयोग बना है इसका लाभ यदि हमने नहीं उठाया तो जीवन व्यर्थ चला जाएगा। यदि हम अपने अहंकार में डूबे रहते हैं तो इस अवसर को व्यर्थ खो देंगे। हम साधक है और साधना का अर्थ है सदैव जागृत रहकर कार्य करना। हमारी जागृति ही हमें अवसर की सही पहचान कराती है। यदि हम सही अवसर को पहचान कर उसका सदुपयोग कर लेते हैं तो भाग्य भी स्वयं ही हमारे अनुकूल हो जाएगा।

11 नवम्बर को अर्थबोध शाखा में पूज्य तनसिंह जी रचित सहगीत 'चाहे एक ही जले' पर चर्चा करते हुये वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने बताया कि इस सहगीत में पूज्य श्री ने संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य नारायण सिंह जी रेड़ा के हृदय की पवित्रता एवं पूर्ण समर्पण के भावों को प्रकट किया है। दीपक का उदाहरण देकर बताया कि संघ को अपने पूरे तेल से जलने वाले ऐसे दीप चाहिए जिसकी दीपशिखा कभी काँपें नहीं अर्थात भौतिक एवं सांसारिक समस्याओं से कभी विचलित नहीं होने वाले पूर्ण समर्पित स्वयंसेवक चाहिए। दृढ़ मन वालों के लिए लिखा है कि इन्द्रिय सुख चाहने वाली कई प्रकार की सुखेच्छाएं पथ विचलित करने को होती है लेकिन जो स्वाति की चाह प्रतीक्षारत सीप की भांति अपने लक्ष्य से नहीं भटकता है, ऐसे ध्येयनिष्ठ स्वयंसेवक संघ को चाहिए। जिसमें धरती जितना धीरज हो एवं सूरज की तपन से भी विचलित ना हो, स्वयंसेवक को इतना सहनशील होना चाहिए। अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते ऐसे स्वयंसेवक की चाह आसमान छुने की हो किन्तु किसी पर्वत को नीचा दिखाकर नहीं अर्थात साधक को चाहिए कि किसी को नीचा दिखाकर आगे नहीं बढ़े। साधना में उच्चतम उपलब्धि मिलने पर भी जिनमें कर्तापन का भाव ना हो ऐसे स्वयंसेवक चाहिए अर्थात कितना भी पा ले लेकिन मुंह से एक शब्द भी ना निकले कि मैंने इतना पाया, मैं इतना ऊंचा उठा, मेरी साधना में इतनी सिद्धि मिल गई। मैं जो कुछ भी हूं, मैंने जो भी प्राप्त किया है वो श्री क्षत्रिय युवक संघ की देन है अतः मैं प्रशंसा का पात्र नहीं हूँ। सफलता प्राप्त करने वाले जीत के घोड़ों की भाँति हार के स्थान की तरफ जायेंगे ही नहीं। संघ रूपी शराब की चाह रखने वाला स्वयंसेवक संसारिक दूनिया को भूल जाना चाहता है। पूज्य तनसिंह जी ने पूर्ण समर्पित कर्मनिष्ठ स्वयंसेवक के लिए यह गीत लिखा है। संसार की कोई भी चीज जिसे आकर्षित नहीं करती, जिसके हृदय में केवल संघ, समाज एवं कर्तव्य ज्ञान है, इस जीवन को सार्थक करने की चाह है। पूज्य नारायण सिंह जी ऐसे ही स्वयंसेवक का उदाहरण है। अतः हमें भी उनसे प्रेरणा लेकर ऐसा स्वयंसेवक बनने का प्रयास करना चाहिए। अपनी पूरी शक्ति से पूरा जीवन संघ को समर्पित करने वालों के लिए यह गीत है। 18 नवंबर को पूज्य तनसिंह जी रचित 'इस अंतर की यह आवाज सुनो' सहगीत पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी है और बुद्धि का कार्य है सोचना। इसलिए प्रत्येक मनुष्य कुछ ना कुछ सोचता ही रहता है। इनमें कई विचार ऐसे होते हैं जो क्षणिक होते हैं, अल्पायु होते हैं तो कई विचार जीवन व्यापी प्रभाव वाले होते हैं। ऐसे विचारों को व्यक्त करना आवश्यक होता है किंतु केवल अभिव्यक्त करने से कोई परिवर्तन नहीं आता उपनिषदों में भी कहा गया है कि आत्म ज्ञान प्रवचनों को सुनकर या पुस्तकों को पढ़कर नहीं आता। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि पढ़ना अथवा सुनना पूर्णतया व्यर्थ है। श्रेष्ठ ज्ञान को पढ़ना और सुनना सदैव लाभकारी होता है किंतु सत्य को जानने के लिए हृदय का प्रयोग करना पड़ता है। हृदय की वाणी को सुनने से ही सत्य का ज्ञान होता है। इस गीत में पूज्य तन सिंह जी ने भी उसी हृदय की आवाज को सुनने के लिए आह्वान किया है। इस आवाज को सुनकर इस प्रकार का जीवन जीने की बात कही गई है कि जिससे हमारा जीवन और हमारी मृत्यु भी सभी के लिए कल्याणकारी और प्रेरणास्पद बने। यह मार्ग कठिन होने से बहुत कम ही व्यक्ति इस कर्तव्य पथ पर चलते हैं इसीलिए यह पथ उजड़ा हुआ है, हमारे इस मार्ग पर चलने से ही यह पुनः प्रशस्त होगा। इस कर्तव्य मार्ग पर चलने के अतिरिक्त हमारे पास कोई उपाय भी नहीं है इसलिए चाहे प्रसन्नता से चलें अथवा विवश होकर चलें, इस पर चलना ही पड़ेगा। कालदेव की मांग हमें पूरी करनी ही पड़ेगी और इसे पूरी करने का एकमात्र मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ है। भले ही कुछ समय लग जाए लेकिन मंजिल इसी मार्ग से मिलेगी, इसलिए तन सिंह जी ने निरंतर इस पर चलते रहने की बात कही है।

बेटी ने दहेज के स्थान पर मांगा समाज की बालिकाओं के लिए छात्रावास

व्यवसायी व समाजसेवी किशोर सिंह कानोड़ की पुत्री अंजलि कंवर ने अपने विवाह में दहेज के स्थान पर समाज की बालिकाओं की शिक्षा के लिए बालिका छात्रावास के निर्माण हेतु अपने पिता से राशि दिलवाकर समाज के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। किशोर सिंह कानोड़ बाड़मेर में बनने वाले राजपूत बालिका छात्रावास हेतु पहले ही एक करोड़ रुपए की सहायता दे चुके हैं किंतु लगभग 75 लाख की राशि की छात्रावास निर्माण के लिए और आवश्यकता थी। 21 नवम्बर को उनकी पुत्री अंजलि कंवर का विवाह प्रवीण सिंह रणधा से हुआ। इस अवसर पर अंजलि कंवर ने पिता से दहेज देने के स्थान पर छात्रावास के निर्माण में कम पड़ रही राशि की पूर्ति करने का आग्रह किया जिसे किशोर सिंह जी ने सहर्ष स्वीकार करते हुए संस्था को खाली चेक देकर आवश्यक राशि भरने के लिए कहा। समाज की बालिकाओं के लिए शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती हुई यह घटना हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

चित्रदुर्ग (कर्नाटक) में प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

महाराष्ट्र संभाग के दक्षिण भारत प्रांत के चित्रदुर्ग (कर्नाटक) में 20 नवंबर से 22 नवंबर तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन करते हुए पवन सिंह बिखरनिया ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज को एक सूत्र में बांधने के लिए कार्य कर रहा है। जब हमारे विचार और कर्म अपने लक्ष्य के अनुरूप होंगे तभी हम समाज में वास्तविक एकता ला सकेंगे। इसके लिए आवश्यक है कि हम निरंतर संघ द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते रहें और जो सीखा है उसका अभ्यास करते रहें। कर्नाटक के स्थानीय क्षत्रियों ने भी शिविर में भाग लिया व संघ की कार्यप्रणाली से प्रभावित हुए तथा कर्नाटक में ऐसे और शिविर आयोजित करने की मांग की।

नारी में सिसोदिया राणा समाज का स्नेह मिलन संपन्न

गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के अंतर्गत नारी गांव में 14 नवंबर को सिसोदिया राणा समाज के पांच गांवों का स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गोहिलवाड़ राजपूत समाज के प्रमुख वासुदेव सिंह वरतेज ने कहा कि यदि इस समय क्षत्रियोचित संस्कार निर्माण का कार्य कोई कर रहा है तो वह केवल क्षत्रिय युवक संघ है। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक मंगल सिंह धोलेरा ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया तथा हीरक जयंती के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की।

22वें क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह हेतु आवेदन का अवसर

श्री क्षत्रिय प्रतिभा विकास एवं शोध संस्थान अजमेर द्वारा 22वां क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह शैक्षणिक सत्र 2019-20 व 2020-21 के लिए फरवरी 2022 में अजमेर में आयोजित किया जाना संभावित है इसके लिए राजस्थान के प्रतिभावान क्षत्रिय छात्र छात्राएं आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की अंतिम दिनांक 15 दिसंबर 2021 है। ऑनलाइन आवेदन संस्थान की वेबसाइट www.skpv.org पर किए जा सकते हैं। आवेदन हेतु न्यूनतम पात्रता का विवरण निम्नानुसार है-

(1.) दसवीं सीबीएसई/आरबीएसई - 90%
(2.) 12वीं सीबीएसई/आरबीएसई - 85%
(3.) स्नातक (सभी विषय-वर्ग) - 75%
(4.) स्नातकोत्तर (सभी विषय-वर्ग) - 70% (5.) पीएचडी डिग्री प्राप्त
(6.) NEET, JEE, CLAT, JRF, SRF द्वारा सरकारी संस्थाओं में चयन
(7.) UPSC, RPSC द्वारा प्रशासनिक सेवा में चयन
(8.) नेशनल गेम्स में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त
(9.) भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित
(10.) भारतीय सेना में कमीशन/अर्धसैनिक बलों में समकक्ष कमीशन प्राप्त
(11.) संस्थान की प्रतिभा चयन समिति द्वारा चयनित अन्य क्षेत्रों में यथा सैन्य वीरता मेडल, एनसीसी, स्वच्छता, कोविड, कला आदि में विशेष योग्यता प्राप्त प्रतिभाएं

संस्था द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर छात्र छात्राओं को छात्रवृत्ति भी दी जाएगी जिसके लिए उपरोक्त पात्रता प्राप्त प्रतिभाओं को वार्षिक आय प्रमाण पत्र (तीन लाख वार्षिक आय तक) के साथ अलग से आवेदन करना होगा। समाज के प्रतिभावान छात्र छात्राओं को मुख्य प्रतियोगी परीक्षाओं एवं साक्षात्कार हेतु निशुल्क कोचिंग की व्यवस्था भी संस्थान द्वारा अजमेर में की जाएगी।

गोंडल में शिक्षा क्षेत्र के विद्वानों व विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों से विमर्श

गुजरात के गोंडल में सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के दौरान माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास के सानिध्य में विमर्श बैठकों का भी आयोजन हुआ जिनमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले समाजबंधुओं से सामाजिक मुद्दों पर विचार विमर्श हुआ।। 11 नवंबर को दिन में 10 से 12 बजे तक शिक्षण क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों के साथ संघ प्रमुख श्री की बैठक हुई। बैठक में उन्होंने कहा कि जो शिक्षा जीवन को बदलने में सहायता करती है, वही वास्तविक शिक्षा है। शिक्षा जीवन व्यापी होनी चाहिए लेकिन आज का शिक्षण केवल रोजगार तक सीमित होकर रह गया है। उसमें व्यक्ति के विकास तथा सुधार की आवश्यकता का कोई ध्यान नहीं रखा गया है। आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं इसलिए आपकी जिम्मेदारी है कि आप शिक्षा को व्यापकता प्रदान करें और अपने विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में सहयोगी बनकर राष्ट्र और मानवता की भावी पीढ़ियों को चरित्रवान बनाने का कार्य करें। बैठक में शिक्षण क्षेत्र के लगभग 40 सज्जन उपस्थित रहे। 11 नवंबर को ही शाम को 4 से 6 बजे तक राजकोट जिले की राजपूत संस्थाओं के साथ एक बैठक रखी गई जिसमें मातृशक्ति की भी उपस्थिति रही। संघप्रमुख श्री ने सभी संस्थाओं के कार्य की सराहना की और कहा कि संघ कार्य भी आप सब के सहयोग से ही चल रहा है और समाज का खोया हुआ गौरव समाज में क्षत्रियोचित संस्कारों के निर्माण द्वारा ही वापस लाया जा सकता है। बैठक में राजकोट की सभी प्रमुख राजपूत संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह धोलेरा, बलवंत सिंह पांची तथा प्रवीण सिंह सोलिया भी बैठक में उपस्थित रहे। बैठक की संख्या लगभग 250 रही। 12 नवंबर को 11 से 12 बजे तक गोंडल शहर के प्रबुद्ध नागरिकों तथा शहर की अन्य संस्थाओं के साथ संघप्रमुख श्री की बैठक हुई जिसमें गोंडल शहर की 10 संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। उनसे चर्चा करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि सामाजिक एकता ही राष्ट्र के विकास की नींव बन सकती है। यदि समाज बिखरा हुआ है तो राष्ट्र कभी भी संगठित नहीं हो सकता और बिना संगठन के विकास के मार्ग पर बढ़ना संभव नहीं है। सभी कार्यक्रमों के अंत में अतिथियों को संघ साहित्य भेंट में दिया गया।

आशुसिंह राठौड को अति विशिष्ट सेवा मेडल और ले. जनरल दलीप सिंह को परम विशिष्ट सेवा मेडल

नागौर जिले के लाछड़ी गांव के आशुसिंह राठौड को भारत के राष्ट्रपति महोदय द्वारा 22 नवम्बर को राष्ट्रपति भवन में आयोजित कार्यक्रम में अति विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किया गया। वे पिछले दो वर्ष से उत्तराखंड में रक्षा मंत्रलय के अधीन आने वाले बी.आर.ओ विभाग में चीफ इंजिनियर के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं। इन्होंने अपने कार्यकाल में सामरिक महत्व की आठ सड़के, सात पुल निर्मित किये हैं तथा वर्षों से लंबित परियोजनाओं पर त्वरित निर्णय कर कार्य कार्य को गति प्रदान की है। इस साल शिवालिक परियोजना उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में 800 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे है जो एक कीर्तिमान है। कार्यक्रम में नागौर जिले की डेगाना तहसील के हरसोलाव निवासी सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल दलीप सिंह को भी विशिष्ट सेवा मैडल से सम्मानित किया गया। आपने सेना में रहते हुए अनेक विशिष्ट उपलब्धियां हासिल की थी।

डूंगरपुर जिला मुख्यालय पर स्थित ओडिटोरियम में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की बैठक वागड़ क्षत्रिय महासभा की शहर इकाई के सहयोग से 14 नवंबर को रखी गई जिसमें संघ, श्री प्रताप फाउंडेशन व श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की विस्तार से जानकारी दी गई।

आजाद सिंह राठौड़ को डॉक्टरेट की मानद उपाधि

राजस्थान में कांग्रेस के युवा नेता व लेखक आजाद सिंह राठौड़ को वाणिज्य मंत्रालय के इंडियन इंस्टीट्यूट आफ कॉरपोरेट अफेयर्स परिसर में 21 नवम्बर को इंटरनेशनल इंटर्नशिप यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित दीक्षांत समारोह में डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। आजाद सिंह को यह मानद उपाधि उनके अंतरराष्ट्रीय मामलों, सैन्य व विदेश नीति पर किए गए उत्कृष्ट व शोधपूर्ण लेखन कार्य के लिए प्रदान की गई। आजाद सिंह 'कारगिल द हाइटस ऑफ ब्रेवरी' और 'बलोचिस्तान द हाइट ऑफ ऑप्रेसन' जैसी चर्चित पुस्तकों के लेखक है। आजाद सिंह ने इस सम्मान कार्यक्रम में अपना शोध पत्र भी प्रस्तुत किया।

(पेज एक का शेष) संघ सबका...

समाज में इसको लेकर विशेष उत्साह है और सभी का भरपूर सहयोग मिल रहा है। आज इसके पोस्टर का विमोचन है जिसमें आप सभी पधारें हैं और आप सभी का सहयोग मिलेगा ऐसी अपेक्षा है। इसके बाद संपतसिंह धमोरा, राव राजेंद्र सिंह, चन्द्रभान सिंह आक्या, बाबूसिंह राठौड़, गजेंद्र सिंह खींवसर, यशवर्धन सिंह झेरली, पराक्रमसिंह राठौड़, राजेंद्र सिंह भिंयाड़, दुर्जनसिंह सिहड़ार, सत्येंद्र सिंह जाखल, हनुमान सिंह खांगटा, हमीरसिंह भायल, भूपेंद्र सिंह सावर, श्रवणसिंह सान्या, राजेंद्र सिंह जेरठी, महेन्द्र सिंह खेड़ी, देवेंद्र सिंह बुटाटी, बलवीर सिंह हाथोज, नरपतसिंह राजवी, रामसिंह पिपराली, स्वरूप सिंह खारा, धूड़ सिंह कोटपूतली, प्रतापसिंह खाचरियावास, प्रदीपसिंह टांई, जितेंद्र सिंह खाचरियावास, श्रीपाल सिंह शक्तावत, आसुसिंह सुरपुरा, खुमाणसिंह सोढ़ा, जालमसिंह शिव, दुर्गसिंह खींवसर, अजयसिंह परमार, अजय सिंह चौहान, हर्षवर्धन सिंह रूद आदि ने अपने विचार रखे एवं आर्थिक व अन्य सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया। सभी ने कहा कि संघ जैसी प्रतिष्ठित संस्था की हीरक जयंती में सहयोगी बनना हमारा सौभाग्य है। कार्यक्रम के पश्चात प्रेसवार्ता आयोजित की गई जिसमें मीडियाकर्मियों से बात करते हुए माननीय भगवानसिंह रोलसाहबसर ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना को 22 दिसंबर 2021 को 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं जिसे हीरक जयंती समारोह के रूप में मनाया जा रहा है। इसका सहभागी पूरा समाज है, यह कार्यक्रम पूरे समाज के द्वारा ही आयोजित किया जा रहा है। समय बहुत कम रह गया है लेकिन आज की जो यह बैठक हुई है उसमें सभी लोगों ने यह बात कही है कि कार्यक्रम के आयोजन में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं आने देंगे। जब सब का सहयोग है तो किसी प्रकार की अनिश्चितता नहीं रही है और मैं तो विशेष रूप से निश्चिंत हूं कि यह काम भगवान का है, भगवान ही कर रहा है और भगवान के द्वारा ही कराया जा रहा है। इसलिए कोई भी कमी नहीं होगी। 1996 में जब श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्वर्ण जयंती भवानी निकेतन जयपुर में मनाई गई थी तब केवल राजपूत समाज के ही नहीं बल्कि अन्य समाजों के लोग भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। वे भी प्रेरणा लेकर गए कि कार्यक्रम हो तो इस प्रकार का हो। पुलिस व प्रशासन की भी यही प्रतिक्रिया थी कि इतना बड़ा कार्यक्रम हुआ लेकिन किसी को किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। अन्य संस्थाओं का भी भरपूर सहयोग रहा था। इस बार भी सभी का सहयोग वैसे ही मिलेगा यह हमारा विश्वास है। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज का है, देश का है, मानवता का है इसलिए सभी सहयोग करते हैं। जब भी हम क्षेत्र में जाते हैं तो सभी हमारी बात सुनते हैं, मानते हैं। यह श्री क्षत्रिय युवक संघ का चरित्र है कि उसका काम बोलता है। 75 वर्ष में हमने जो पीछे रह कर कार्य किया है उसका परिणाम समाज को दिखना चाहिए, इसके लिए यह कार्यक्रम किया जा रहा है। समाज में अच्छाइयों को स्थापित करने और बुराइयों का निवारण करने का प्रयत्न संघ द्वारा किया जा रहा है। यह कोई पंचवर्षीय योजना का काम नहीं है। किसी समाज को बदलना शताब्दियों का काम है और समाज तभी बदलेगा जब व्यक्ति बदलेगा। लेकिन बाहर की विपरीत परिस्थिति के कारण व्यक्ति के निर्माण का कार्य बड़ा कठिन है लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ ने इस कठिन कार्य को भी स्वेच्छा से स्वीकार किया है। राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि देश और धर्म के सिद्धांत, हमारी परंपरा और संस्कृति के लिए, धरती के सम्मान और भारत के गौरव के लिए क्षत्रिय ने हमेशा बलिदान किया है। उस बलिदान की परंपरा को पुनर्जीवन देने और समाज में संस्कार निर्माण करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ काम कर रहा है। देश के हर व्यक्ति में संस्कार का निर्माण आज आवश्यक है, तभी हमारा देश और धर्म मजबूत बनेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ सभी की रक्षा की बात करता है, संस्कारों की बात करता है। ऐसी संस्था को 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं, इस अवसर पर सम्पूर्ण समाज सहभागिता निभाकर अपनी प्रसन्नता प्रकट करेगा और हम सब कार्यकर्ता के रूप में काम करेंगे। राजस्थान विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष राव राजेन्द्र सिंह ने कहा कि हीरक जयंती का तात्पर्य केवल 75 वर्ष से नहीं है। संघ एक ऐसी संस्था है जो प्रजातांत्रिक भारत के परिप्रेक्ष्य में समाज चरित्र का निर्माण करने हेतु अपना सब कुछ समर्पण करती है। क्षत्रिय किसी जाति का नाम नहीं, यह एक चरित्र का नाम है और इस चरित्र को चरितार्थ करने वाले संघ ने समाज और राष्ट्र की सेवा में अपने 75 वर्ष का संपूर्ण रूप से निवेश किया है। राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में, मानवता की धरोहर को सुरक्षित रखने में, एक मनुष्य होने के नाते हमारा दायित्व समझाने और अधिकारों से ज्यादा दायित्व के प्रति सचेतना जगाने का उद्देश्य लेकर चलने वाले संघ का संदेश सम्पूर्ण मानव समाज को देने का कार्य यह हीरक जयंती कार्यक्रम करेगा।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक दातारसिंह थांवला का देहावसान

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **दातारसिंह थांवला** का 24 नवंबर को देहावसान हो गया। आप संघ के मेड़ता शिविर में अक्टूबर 1961 में संघ के संपर्क में आये थे। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

दातारसिंह थांवला

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हमारे प्रिय संघबन्धु

प्रेमसिंह जिंजनीयाली

को राजस्थान सरकार के

जलदाय विभाग

में

कनिष्ठ लिपिक

बनने पर हार्दिक बधाई

एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु:

सांवल सिंह मोढ़ा	**गिरधर सिंह** जोगीदास का गांव	**भगवान सिंह** तेजमालता	**भवानी सिंह** बैरसियाला
शेरसिंह जोगीदास का गांव	**खंगार सिंह** झलोड़ा	**अशोक सिंह** भीखसर	**हरिसिंह** सांकड़ा
पदमसिंह तेजमालता	**धर्मपाल सिंह** आसकन्द्रा	**भोजराज सिंह** तेजमालता	**अर्जुन सिंह** फलसूंड
चतुर सिंह म्याजलार	**चतुर्भुज सिंह** तेजमालता	**महिपाल सिंह** तेजमालता	**देवीसिंह** झलोड़ा
कंवराज सिंह सेतरावा	**प्रेमसिंह** दुधवा	**हिम्मत सिंह** म्याजलार	**लूणसिंह** बड्डा

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org